INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

ग्राम विकास अधिकारी (VDO)

(मुख्य परीक्षा हेतु)

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSSB)

भाग – 4

भारत + विश्व + राजस्थान का भूगोल + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (मुख्य परीक्षा)"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order करें - https://shorturl.at/qCIJS

WhatsApp करें - https://wa.link/9h4q2x

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का भूगोल	
1.	राजस्थान का भौगोलिक परिदृश्य	1
2.	राजस्थान का मौसम (जलवायु	30
3.	नदियाँ एवं झीलें	39
4.	वनस्पति एवं वन्य जीवन एवं वन सरंक्षण	57
5.	मिट्टी के प्रकार	66
6.	भौगोलिक क्षेत्र	71
7.	मानव संसाधन एवं जनसंख्या समस्याएँ	71
8.	बेरोजगारी	76
9.	गरीबी , सूखा , अकाल व बढ़ता हुआ रेगिस्तान	77
10.	खान एवं खनिज	81
11.	वन, भूमि एवं पानी	91
12.	पशु संपदा	91
13.	वन्य जीवन एवं वन सरंक्षण	99
14.	ऊर्जा संसाधन	99
	राजस्थान के संदर्भ में कृषि व कृषि संसाधन	
1.	राजस्थान की खाद्य एवं वाणिज्यिक फसलें	108
2.	कृषि आधारित उद्योग	118
3.	वृहद सिंचाई एवं नदी घाटी पारियोजनायें	120
4.	बंजर भूमि व सूखा क्षेत्र का विकास के लिए परियोजनाएं	128
5.	इंदिरा गांधी नहर परियोजना	130
6.	उद्योगों का विकास एवं उनका स्थान	130
7.	लघु एवं ग्रामोद्योग	133
8.	निर्यात सामग्री	135

9.	राजस्थानी हस्तकलाएँ	137
10.	आदिवासी और उनकी अर्थव्यवस्था	138
11.	विभिन्न आर्थिक योजनाएं	142
12.	विकास संस्थाएँ	148
13.	राजस्थान में सहकारिता	148
14.	लघु उद्यम, वित्तीय संस्था एवं विकास संस्थाएँ	153
	राजस्थान राजव्यवस्था	
1.	पंचायती राज	155
	संसार के व्यापक भौगोलिक क्षेत्र	
1.	संसार के व्यापक भौगोलिक क्षेत्र, महत्वपूर्ण स्थान एवं नदियाँ	160
2.	पहाड़	175
3.	महाद्वीप	177
	भारत का पर्यावरण और वन्यजीवन	
1.	सामान्य परिचय	184
2.	भौतिक विभाजन	188
3.	नदियाँ एवं झीलें	196
4.	जलवायु	207
5.	कृषि एवं पशुपालन	211
6.	मृदा / मिट्टी	224
7.	प्राकृतिक वनस्पतियाँ	228
8.	प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	232
9.	भारतीय उद्योग	243
10.	परिवहन तंत्र	247
11.	पारिस्थितिकी	251

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है।
- रेडक्लिफ रेखा 17 अगस्त 1947 को भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा बन गई।
- इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित हैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख को मिलाकर)
2. लद्दाख
3. पंजाब (547 कि.मी.)
4. राजस्थान (1070 कि.मी.)
5. गुजरात (512 कि.मी.)

- रेडक्लिफ रेखा के साथ **राजस्थान की सर्वाधिक सीमा - (1070 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के साथ **सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय - श्रीनगर
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब
- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के पांच जिलों** से लगती है।
  1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.
  2. बीकानेर-168 कि.मी.
  3. फलौदी
  4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
  5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

  रेडक्लिफ पर सर्वाधिक सीमा जैसलमेर तथा न्यूनतम सीमा रेखा फलौदी बनाता है।

  41 जिले बनाने से पहले सबसे कम सीमा बीकानेर की लगती थी।

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के ब्राह्मणों की ढाणी, बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान से सीमा बनाती है।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – बहावलपुर
राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर
राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे बड़ा जिला बहावलपुर है।
राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे छोटा जिला सुकुर है।

<u>पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।</u>

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा फलौदी की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय – श्री गंगानगर
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय – बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर

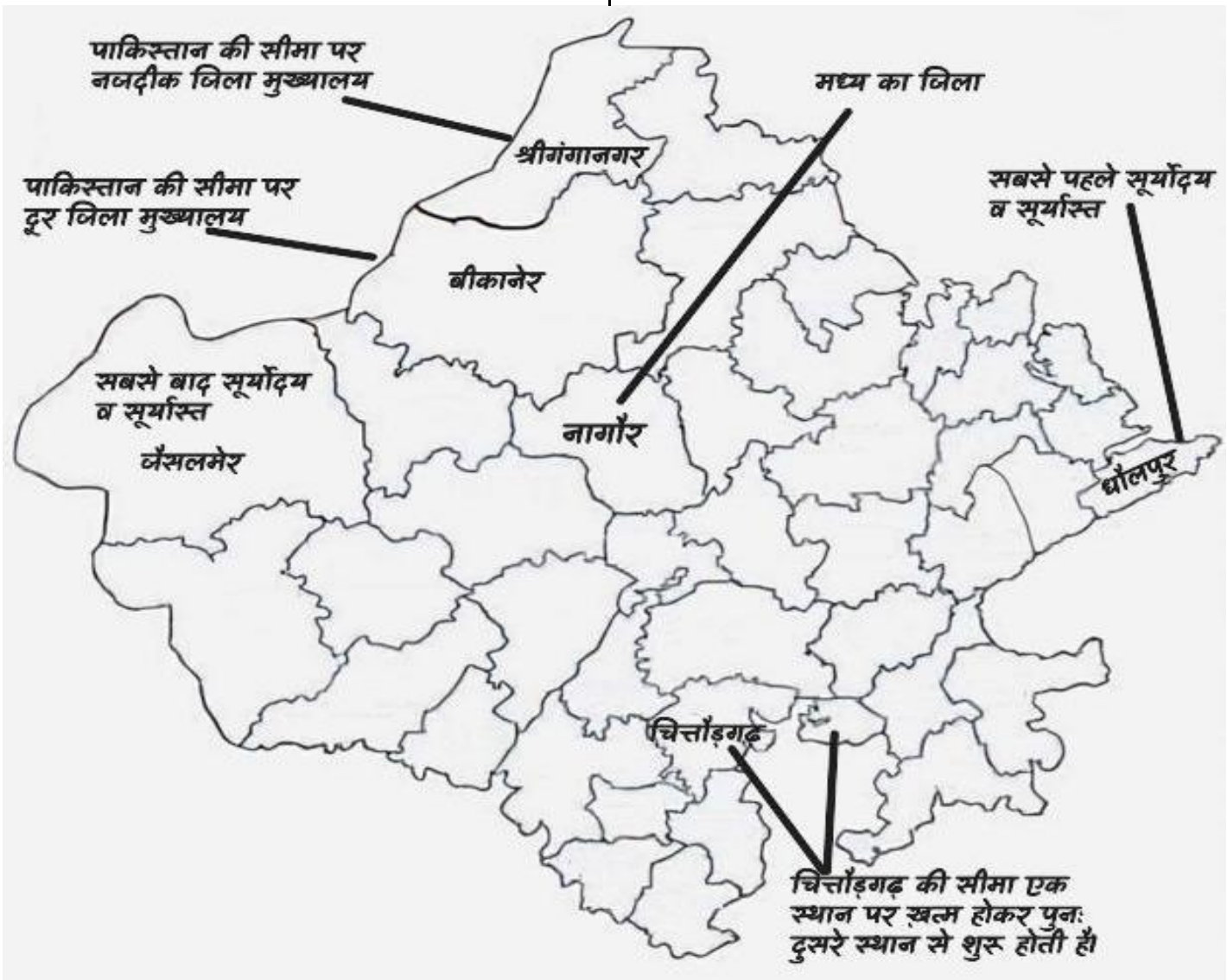

- राजस्थान के अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 5 (श्री गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, बाड़मेर)
- राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 3 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी)

राजस्थान के 13 जिलें ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय।
झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

राजस्थान के 2 ऐसे जिले हैं जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-
हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा
धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश
बाँसवाड़ा :- मध्यप्रदेश + गुजरात
डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा

शोर्ट ट्रिक

हरियाणा की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले हैं।

***"खैर हनुमान** ने **डीग** के **झुन्झुने चुराकर कोट अली** को दिए"*

सूत्र		***जिला***
खैर	-	*खैरथल*
हनुमान	-	*हनुमानगढ़*
डीग	-	*डीग*
झुंझुन्ने	-	*झुंझुनू*
चुरा	-	*चुरू*
कोट	-	*कोटपूतली*
अली	-	*अलवर*

राजस्थान की सीमा से लगने वाले हरियाणा के जिले हैं।

***"महेंद्र मेवा रेवड़ी भी सिरसा हिसार फतेह** करके खाएगा"*

सूत्र		***जिला***
महेंद्र	-	*महेंद्रगढ़*
मेवा	-	*मेवात*
रेवड़ी	-	*रेवाड़ी*
भी	-	*भिवानी*
सिरसा	-	*सिरसा*
हिसार	-	*हिसार*
फतेह	-	*फतेहाबाद*

उत्तरप्रदेश (877 किमी॰)

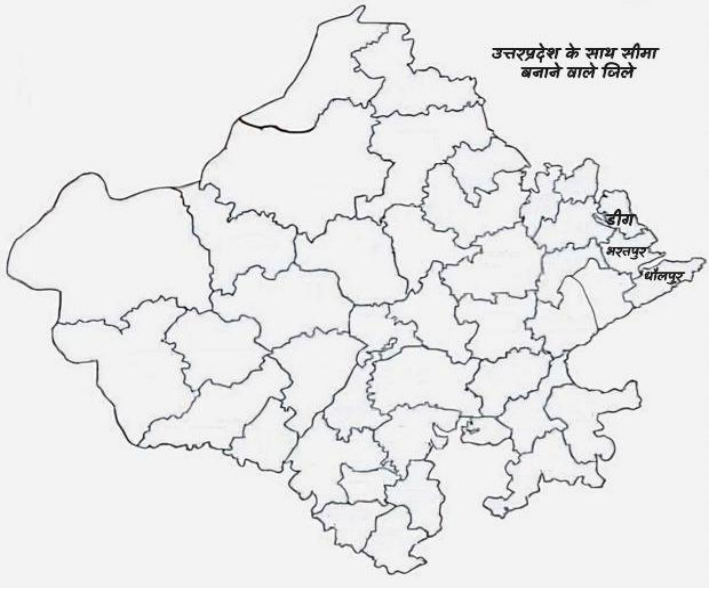

- *राजस्थान के तीन जिलों (डीग, भरतपुर, धौलपुर) की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथुरा व आगरा) से लगती है।*
- *उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम सीमा डीग की लगती है।*
- *उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला डीग है।*

मध्यप्रदेश (1600 किमी॰)

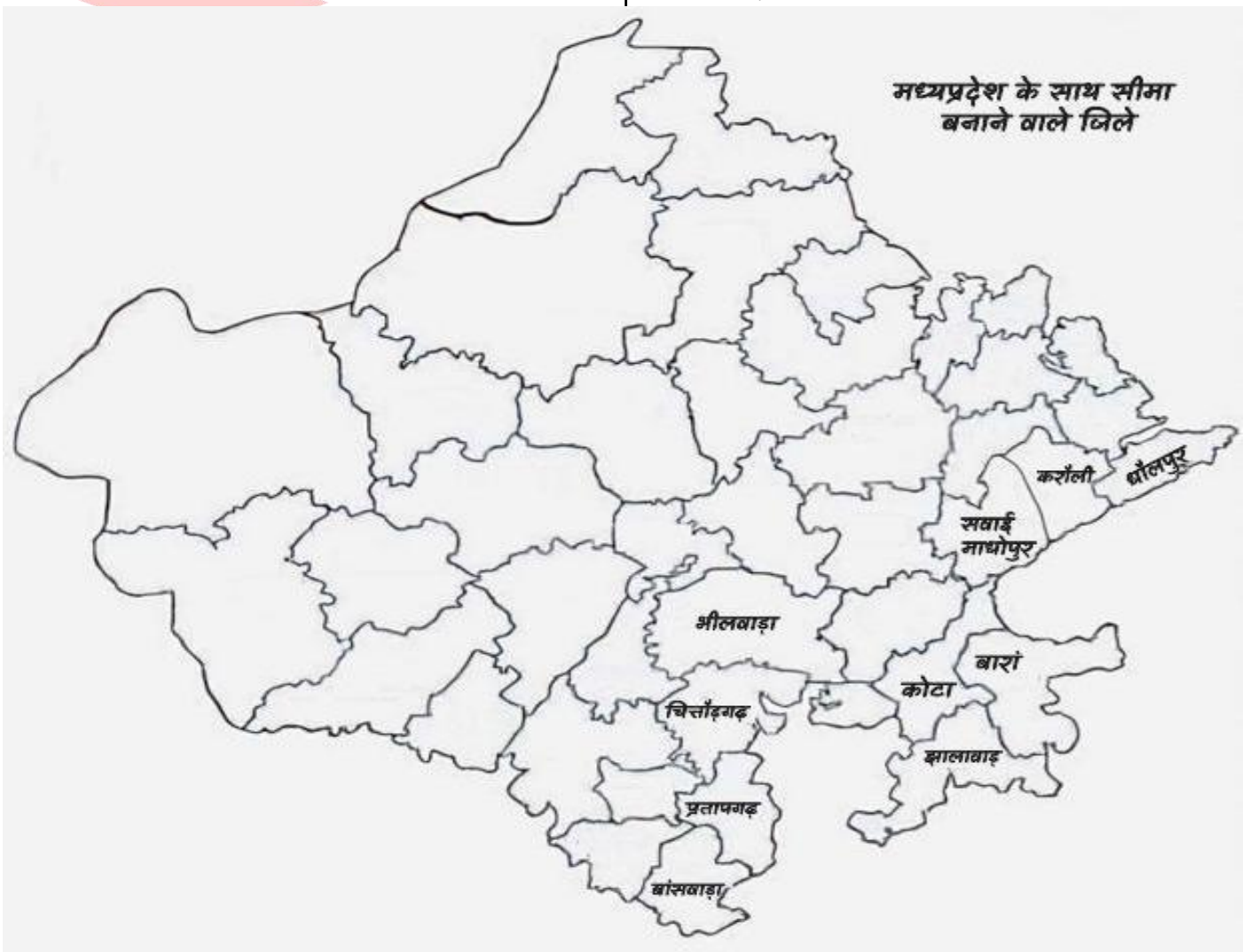

- राजस्थान के 10 जिलों (धौलपुर, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, कोटा, झालावाड, बारां, बांसवाडा, करौली) की सीमा मध्यप्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है। (झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है।
- मध्यप्रदेश राजस्थान की दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित है।
- नीमच जिले के साथ राजस्थान की तीन दिशाओं से सीमा लगती है।

गुजरात (1022 किमी॰)

- राजस्थान के 6 जिलों (बाड़मेर, जालोर, सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा) की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती हैं। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद) गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा उदयपुर व न्यूनतम सीमा बाड़मेर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय डूंगरपुर व दूर मुख्यालय बाड़मेर है।
- गुजरात सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला बाड़मेर व छोटा जिला डूंगरपुर है।
- राजस्थान के पांच पड़ोसी राज्य है - पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात

❖ **अन्य तथ्य**

- 26 जनवरी 1950 को संवैधानिक रूप से हमारे राज्य का नाम राजस्थान पड़ा।
- राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर 1956 को आया । इस समय राजस्थान में कुल 26 जिले थे।
- 26 वाँ जिला – अजमेर - 1 नवम्बर, 1956
- 27 वाँ जिला – धौलपुर - 15 अप्रैल, 1982, यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 28 वाँ जिला- बारां - 10 अप्रैल, 1991, यह कोटा से अलग हो कर नया जिला बना।
- 29 वाँ जिला – दौसा - 10 अप्रैल, 1991, यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 30 वाँ जिला राजसंमद – 10 अप्रैल, 1991, यह उदयपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- 31 वाँ जिला – हनुमानगढ़ - 12 जुलाई, 1994, यह श्रीगंगानगर से अलग होकर नया जिला बना।
- 32 वाँ जिला करौली 19 जुलाई, 1997, यह सवाई माधोपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **33 वाँ जिला – प्रतापगढ़ - 26 जनवरी, 2008,** यह तीन जिलों से अलग होकर नया जिला बना।
- चित्तौड़गढ़ - छोटीसादड़ी, अरनोद, प्रतापगढ़ तहसील
- उदयपुर - धारियाबाद तहसील
- बाँसवाड़ा- पीपलखुट तहसील
- प्रतापगढ़ जिला परमेशचन्द्र कमेटी की सिफारिश पर बनाया गया ।
- प्रतापगढ़ जिले ने अपना कार्य 1 अप्रैल, 2008 से शुरू किया।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग - बीकानेर व जोधपुर

- सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - जोधपुर
- न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय -जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग - जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग-बीकानेर

अंतर्राज्यीय सीमा

- अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग – 7
- केवल अंतरराज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग – 5
- अंतर्राष्ट्रीय व अन्तर्राज्यीय दोनों सीमा बनाने वाले संभाग -2 (बीकानेर व जोधपुर)
- सर्वाधिक अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग – उदयपुर
- सबसे कम अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग – अजमेर
- अंतर्राज्यीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - भरतपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय - जोधपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग -जोधपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग – भरतपुर
- दो बार अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग -उदयपुर (चित्तौड़गढ़ के दो भाग)
- राजस्थान का मध्यवर्ती संभाग - अजमेर
- राजस्थान अपने **वर्तमान स्वरूप। नवम्बर 1956** को आया।
- 8 जिलों वाला संभाग – जोधपुर
- 7 जिलों वाले 2 संभाग (जयपुर व उदयपुर) हैं।
- 6 जिलों वाला संभाग अजमेर है।
- 5 जिलों वाला एक संभाग भरतपुर है।
- 4 जिलों वाले संभाग (बीकानेर व कोटा) हैं।
- राज्य के सर्वाधिक 6 संभागों की सीमा को स्पर्श करनें वाला संभाग – अजमेर
- तीन राज्यों की सीमा को स्पर्श करने वाला संभाग – भरतपुर संभाग
- सर्वाधिक वर्षा एवं आर्द्रता वाला संभाग – कोटा संभाग
- राजस्थान का पूर्वी संभाग – भरतपुर संभाग
- राजस्थान का पश्चिमी संभाग – जोधपुर संभाग
- राजस्थान का उत्तरी संभाग – बीकानेर
- राजस्थान का दक्षिणी संभाग – उदयपुर

❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान दिवस मनाया जाता है ? - 30 मार्च
2. मत्स्य संघ का प्रशासन् राजस्थान को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया गया ? – सन् 1949 में 15 मई 1949 को जब मत्स्य संघ का विलय संयक्त वृहत राजस्थान में किया गया।
3. राजपूताना के भौगोलिक क्षेत्र को राजस्थान नाम दिया गया? - 1 नवम्बर 1956
4. वृहत राजस्थान के प्रधानमंत्री थे? – हीरा लाल शास्त्री
5. कितनी रियासतों और ठिकानों के एकीकरण से राजस्थान का निर्माण हुआ ? - 19 रियासतें और 3 ठिकानें
6. 1527 में महाराणा सांगा व बाबर के मध्य खानवा का युद्ध किस जिले में हुआ ? - भरतपुर।
7. महाराणा प्रताप को किसने अपनी संपत्ति प्रदान की? - भामाशाह।
8. दिवेर के युद्ध (अक्टू- 1582) के पश्चात् महाराणा प्रताप की राजधानी कहाँ थी? - चावंड।
9. मेवाड़ के इतिहास में राजकुमार को बचाने के लिए अपने बच्चे की कुर्बानी दी?. पन्नाधाय।
10. अजयराज चौहान संस्थापक थे? – अजमेर के।
11. महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कहाँ हुआ? – गोगुन्दा में।
12. आदिवराह की उपाधि किस राजपूत शासक ने धारण की ? – मिहिर भोज प्रथम (यह गुर्जर प्रतिहार वंश का था)।
13. युद्ध भूमि में जाते समय अपने पति द्वारा निशानी माँगने पर किस रानी ने अपना शीश काटकर भेंट कर दिया? –हाड़ी रानी।
14. राजपूतों के किस वंश ने जयपुर पर शासन् किया? - कच्छवाहा।
15. ताम्र नगरी सभ्यता कहलाती थी? – आहड़ की सभ्यता।
16. कालीबंगा कहा स्थित हैं? – हनुमानगढ़।
17. मौर्य सभ्यता के प्रमाण किस स्थान पर मिलें हैं? – विराटनगर जयपुर।
18. पाक सिन्धु सभ्यता व सिन्धु सभ्यता के अवशेष कहाँ से प्राप्त हुए हैं? – कालीबंगा से
19. प्राचीन हड़प्पा स्तरों में एक ही खेत में साथ - साथ दो फसलों को उगाने का साक्ष्य प्राप्त हुआ हैं? – कालीबंगा से।
20. राजस्थान में बौद्ध संस्कृति के अवशेष कहाँ मिलते हैं? – विराटनगर
21. राजस्थान में बौद्ध धर्म केमठ कहाँ मिले हैं? –विराट नगर जयपुर।
22. राजस्थान का अभिलेखागार कहाँ स्थित हैं? - बीकानेर।
23. एनाल्स एंड एंटीक्विटिस ऑफ राजस्थान किसने लिखी थी? – कर्नल जेम्स टॉड ने।
24. जेम्स टॉड कहाँ के पॉलिटिकल एजेंट थे? – पश्चिमी राजस्थान स्टेट का।
25. 1567 – 1568 ई. में चित्तौड़ के मुगल घेरे के दौरान दो राजपूत सामंतों ने दुर्ग की रक्षा करते हुए अपने प्राण त्याग दिए? - जयमल, पत्ता (फत्ता) ।
26. हल्दी घाटी युद्ध में एक मात्र मुस्लिम सरदार जो महाराणा प्रताप के साथ था? – हाकिम खांसरी।
27. मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना किसने की -माणिक्य लाल वर्मा।
28. राजपूताना के किस राज घराने ने प्रजामंडल को संरक्षण दे रखा था- झालावाड़
29. राजस्थान के किस क्षेत्र ने कृषक आन्दोलन प्रारंभ करने में पहल की - मेवाड़।
30. बिजोलिया किसान आन्दोलन के प्रणेता कौन थे – साधू सीताराम दास।

अरावली पर्वतमाला

- अरावली पर्वतमाला "प्राचीन गोंडवाना लैंड प्लेट" का हिस्सा हैं।
- आज वर्तमान में जो अरावली पर्वतमाला हमें देखने को मिलती हैं वह अपने वास्तविक रूप में नहीं हैं अर्थात् इसका मूल भाग नष्ट हो चुका हैं।
- यह मूल अरावली का खंड मात्र बचा हुआ हैं। इसी कारण इसे "**अवशिष्ट पर्वतमाला**" भी कहा जाता हैं
- इस पर्वतमाला की उत्पत्ति का काल प्रीकैंब्रियन (पेलियो जोइक) माना गया हैं अर्थात् अरावली पर्वतमाला विश्व की सबसे प्राचीनतम "**वलित पर्वतमाला**" हैं।

वलित पर्वत से आशय -

- "वलित पर्वत अर्थात् मोड़दार पर्वत वे पर्वत हैं जिनका निर्माण वलन नाम की भू-गर्भिक प्रक्रिया के तहत हुआ हैं।
- प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के बाद इन के निर्माण के बारे में यह माना जाता हैं कि भू - सन्नतियों में जमा अवसादों की दो प्लेटों के आपस में करीब आने के कारण दबकर और सिकुड़ कर जो सिलवटें ऊपर की ओर उठती हैं उससे जो निर्माण होता हैं उस पर्वत को वलित पर्वत कहते हैं
- टर्शियरी युग में बने वलित पर्वत आज सबसे महत्त्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला में हैं जैसे आल्प्स पर्वत, हिमालय पर्वतमाला, इत्यादि ।
- विश्व के नवीनतम पर्वत हिमालय, यूराल, एंडीज इत्यादि सभी वलित पर्वत हैं।
- रूस में उपस्थित यूराल पर्वत गोलाकार दिखाई देता हैं और इसकी ऊँचाई काफी कम हैं भारत की **अरावली पर्वतमाला विश्व की सबसे प्राचीन वलित पर्वत श्रृंखला हैं ।**"

अरावली पर्वतमाला को अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग नामों से पुकारा जाता हैं जैसे -

क्षेत्र		**उपनाम**
बूंदी में	-	आडावाला पर्वत
गुजरात में	-	अरावली पर्वत
सीकर में	-	माल खेत की पहाड़ियाँ
जालौर तथा बालोतरा में	-	मालाणी
उदयपुर जिले में	-	एडाबेटा

नोट -

- अरावली पर्वतमाला की भू-गर्भिक बनावट का अध्ययन करने वाला **प्रथम व्यक्ति ए. एम. हेरोन** था, जिसने 1923 में अरावली पर्वतमाला का सर्वप्रथम अध्ययन किया।
- **अरावली पर्वतमाला** की तुलना **अमेरिका के अल्पेशियन पर्वतों** से की जाती हैं।
- अरावली पर्वतमाला को **नदियों की जन्मस्थली भी** कहा जाता हैं।

अरावली पर्वतमाला का विस्तार एवं स्थिति -

1. अरावली पर्वतमाला का **उद्भव सबसे दक्षिण में अरब सागर में स्थित मिनिकॉय द्वीप (लक्षद्वीप) से माना जाता हैं** अर्थात् अरावली की जड़ें **अरब सागर** से प्रारंभ होती हैं इसलिए अरब सागर को अरावली की **"उत्पत्ति स्थल या पिता"** कहा जाता हैं ।

2. भारत में अरावली पर्वतमाला का **विस्तार दक्षिण पश्चिम में गुजरात के "पालनपुर"** नामक स्थान **से उत्तर - पूर्व में दिल्ली के "पालम"** नामक स्थान पर समाप्त होती हैं यहाँ पर **इन्हें "रायसीना की पहाड़ियों"** के नाम से जाना जाता हैं इन्हीं रायसीना की पहाड़ियों पर **"राष्ट्रपति भवन"** बना हुआ हैं पालनपुर **(गुजरात)** से **पालम** (दिल्ली) तक इसकी **कुल लंबाई 692 किलो मीटर हैं।**

राष्ट्रपति भवन

- यह भारत के राष्ट्रपति का राजकीय निवास होता हैं यह अद्भुत एवं विशाल भवन रायसीना की पहाड़ी जो कि अरावली पर्वत श्रेणी का भाग हैं पर स्थित हैं।
- यह दुनिया की विशालतम इमारतों में से एक हैं राष्ट्रपति भवन वास्तु कला का उत्कृष्ट नमूना हैं।
- इस भवन के निर्माण की सोच सर्वप्रथम 1911 में उस समय उत्पन्न हुई जब दिल्ली दरबार ने निर्णय किया कि भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली स्थानांतरित की जाएगी।
- इस समय यह भी निर्णय लिया गया था कि दिल्ली में ब्रिटिश वायसराय के रहने के लिए एक आलीशान भवन का निर्माण किया जाएगा।
- यह इमारत 330 एकड़ में फैली हुई हैं । **इस विशाल इमारत का डिजाइन सर एडविन लैंडसीर लुटियस द्वारा तैयार किया गया था।**

3. **राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार सिरोही जिले के "खेड ब्रह्मा" से झुंझुनूं जिले के "सिंघाना", खेतड़ी तक हैं। राजस्थान में अरावली की कुल लंबाई 550 किलो मीटर हैं।**

4. अरावली की कुल लंबाई का 79.48% **(लगभग 80%) भाग राजस्थान में** स्थित हैं जिसका **आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे"** के समान हैं। अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका मे स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती हैं जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

5. उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक **वलित पर्वत** (जिसका विकास हो रहा हैं) तथा **वर्तमान में एक अवशिष्ट पर्वत हैं। इसकी औसत ऊँचाई पहले 5000 मीटर** थी जो कि **वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से** हैं।

6. अरावली पर्वतमाला राज्य के लगभग बीच में स्थित हैं इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती हैं पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।

7. अरावली के पश्चिम में लगभग 60% भू - भाग पर राज्य की 40% जनसंख्या निवास करती है।

8. **अरावली का सर्वाधिक विस्तार दक्षिणी राजस्थान / उदयपुर जिले में है** तथा **सबसे कम विस्तार मध्य राजस्थान / ब्यावर में** है और **अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी** "**गुरु शिखर**" है और जब कि **सबसे नीचे चोटी** "**अजमेर जिले**" **में पुष्कर घाटी है।**

9. यह प्रदेश राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 9% भाग है तथा इस पर राज्य की लगभग 10% जनसँख्या निवास करती है।

- **गुरुशिखर जिसे गुरुमाथा** भी कहा जाता है। हिमालय पर्वत के माउंट एवरेस्ट तथा पश्चिमी घाट के नीलगिरी पर्वत के मध्य की सबसे ऊंची चोटी है।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने यहाँ पर संतों को तपस्या करते हुए देखा था इससे प्रभावित होकर कर्नल जेम्स टॉड ने **इसे संतो का शिखर / हिन्दू ओलम्पस का नाम दिया है** इसकी **औसत ऊँचाई 1722 मीटर** है।
- इसकी चोटी पर दत्तात्रेय ऋषि का मंदिर बना हुआ है।
- यदि इस मंदिर की ऊँचाई को शामिल करें तो गुरु शिखर की कुल ऊँचाई 1727 मीटर होती है।
- गुरुशिखर के नीचे **राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल** "**माउंट आबू**" **स्थित है।**

10. अरावली पर्वतमाला राज्य की नदियों को दो भागों में विभाजित करती है पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग। **अरावली के पश्चिम में बहने** वाली नदियाँ अपना जल **अरब सागर में** तथा अरावली के **पूर्व में बहने वाली नदियाँ** अपना जल **बंगाल की खाड़ी में लेकर** जाते हैं।

11. **अरावली पर्वतमाला पश्चिमी मरुस्थल को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है** जैसा कि आपको पता है मरुस्थल अभी भी लगातार फैल रहा है।

12. अरावली पर्वतमाला **बंगाल की खाड़ी से आने वाले मानसून को रोककर वर्षा करने में सहायक** भी होती है लेकिन अरावली पर्वतमाला से होने वाला "**सबसे बड़ा नुकसान**" यह है कि अरावली पर्वतमाला की स्थिति **अरब सागर के मानसून के समांतर होने के कारण यह बिना वर्षा किए ही गुजर जाता है** इसी वजह से राजस्थान में बहुत कम वर्षा होती है।

13. अरावली पर्वतमाला में पर्वतीय चट्टानों के टूटने से पर्वतीय मिट्टी का निर्माण होता है एवं जिस **पर्वतीय मिट्टी में चूने की अधिक मात्रा होती है उसे लेटेराइट मिट्टी** कहा जाता है इस प्रकार इस अरावली क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी लेटेराइट मिट्टी है।

14. अरावली पर्वतमाला का विस्तार "**दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व**" **की ओर** है। अरावली पर्वतमाला की चौड़ाई और ऊँचाई लगातार "दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व" की ओर कम होती जाती है जबकि इसकी चौड़ाई और ऊँचाई "उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम" की ओर बढ़ती जाती है।

15. अरावली पर्वतमाला भारत की एक महान **जल विभाजक** के रूप में भी कार्य करती है, इसके दोनों ओर नदियाँ बहती हैं।

16. अरावली पर्वतमाला राज्य के **कुल भू-भाग का 9% भाग** है जिस पर **संपूर्ण राज्य की 10% जनसंख्या निवास करती है।**

17. अरावली पर्वतमाला में मुख्य रूप से ढलान पहाड़ियों पर मक्का की खेती की जाती है। इस क्षेत्र में **उष्ण कटिबंधीय वन** पाए जाते है। इस क्षेत्र में **कंक्रीट लाल मिट्टी** पाई जाती है।

नोट – अरावली पर्वतमाला को अध्ययन की दृष्टि से मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा गया है -
1. उत्तरी – पूर्वी अरावली 2. मध्यवर्ती अरावली 3. दक्षिणी अरावली

1. **उत्तरी – पूर्वी अरावली –** इस क्षेत्र का विस्तार **जयपुर, खैरथल तिजारा, झुंझुनू, सीकर, डीडवाना - कुचामन, दौसा, अलवर,** जिले में है। इस क्षेत्र में अरावली की श्रेणियां अनवरत ना होकर दूर - दूर हो जाती है। इस क्षेत्र में पहाड़ियों की सामान्य ऊँचाई 450 मीटर से 700 मीटर तक है इस प्रदेश की **प्रमुख चोटियाँ रघुनाथगढ़ (सीकर) 1055 मीटर,** खोह (जयपुर) 920 मीटर, भेराच (अलवर) 792 मीटर, बरवाड़ा (जयपुर) 786 मीटर है।

2. **मध्यवर्ती अरावली –** इस भाग में अरावली का विस्तार कम पाया जाता है जो कि ब्यावर के समीप है इसकी **सबसे ऊंची चोटी नाग पहाड़ियों में स्थित तारागढ़ (870 मीटर अजमेर) है** इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 550 मीटर है। अरावली का यह भाग कटा - फटा होने के कारण यहाँ **अत्यधिक मात्रा में दर्रे** (स्थानीय भाषा में **नाल कटा** कहा जाता है) पाए जाते हैं जैसे - भीलवाड़ा की नाल (पाली), सोमेश्वर की नाल (पाली), बर दर्रा (पाली)
यह मुख्य रूप से अजमेर, पाली, ब्यावर, राजसमंद व कुछ भाग नागौर में विस्तृत है।

3. **दक्षिणी अरावली –** यह मुख्य रूप से **सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, सलूम्बर, डूंगरपुर** में विस्तृत है। इसकी **सबसे ऊंची चोटी जरगा चोटी (1448 मीटर उदयपुर में) है।** इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 1000 मीटर है। इसमें मुख्य रूप से फुलवारी की नाल (उदयपुर), केवड़ा की नाल (उदयपुर) हल्दीघाटी की नाल (राजसमंद) में प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं।

नोट – फुलवारी की नाल वन्य जीव अभ्यारण्य तथा मानसी वाकल बेसिन के लिए प्रसिद्ध है। राज्य में सर्वाधिक नदियों का उद्गम अरावली पर्वत से होता है जबकि **सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में बहती हैं।**

- *तालछापर झील चूरू में स्थित है।*
- ***डेगाना झील नागौर में स्थित है।***
- *फलौदी झील, बाप झील- फलौदी जिले में स्थित है। इस झील में राज्य का पहला कोयला संयंत्र स्थापित किया गया है।*
- *कावोद झील जैसलमेर में स्थित है।*
- *पोकरण झील जैसलमेर में स्थित है।*
- *कुचामन झील – डीडवाना – कुचामन जिले में स्थित है।*

(ब) <u>राजस्थान में मीठे पानी की झीलें –</u>

<u>शोर्ट ट्रिक</u>

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के नाम:-

"जयराज, अना, नडीसि कोका फतेह कर"

सूत्र		***झीलें***
जय	-	*जयसमन्द झील*
राज	-	*राजसमन्द झील*
अना	-	*अनासागर झील*
न	-	*नक्की झील*
डी	-	*डीड़वाना झील*
सि	-	*सिलिसेढ़ झील*
को	-	*कोलायत झील*
का	-	*कायलाना झील*
फतेह	-	*फतेहसागर झील*

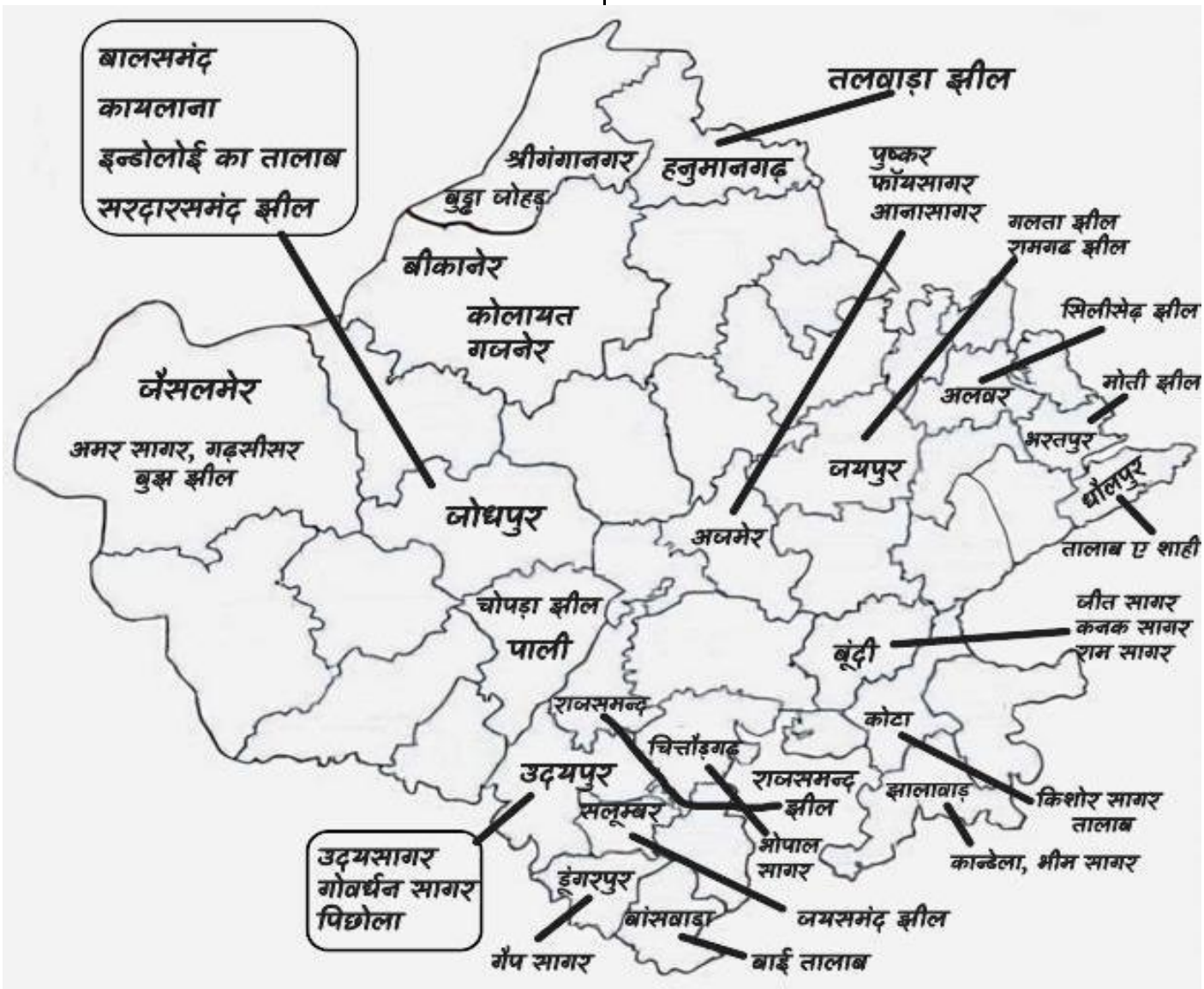

<u>विस्तृत वर्णन</u> *–*

I. <u>पुष्कर झील</u> *–*

- *राजस्थान राज्य के **अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर** (अजमेर शहर से 11 किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।*
- *ऐसा माना जाता है कि इस झील **का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा** करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम "पुष्कर झील" पड़ा, **लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।***
- ***यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।***
- ***इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है** ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी। इस मंदिर का निर्माण दसवीं सदी में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था।*

(नोट :- राजस्थान के बालोतरा जिले में आसोतरा नामक स्थान पर एक अन्य ब्रह्माजी का मंदिर है।)

- ***इस झील को अन्य नामों*** *से भी जाना जाता है, जैसे –* ***कोंकण तीर्थ, तीर्थ स्थलों का मामा*** *52 घाट मंदिरों की नगरी, प्रयागराज का गुरु, हिन्दुओं का पांचवा तीर्थ स्थल इत्यादि।*
- *इस झील के किनारे कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता है । यह मेला राजस्थान का सबसे बड़ा रंगीन मेला है जो प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को विशाल मेले के रूप में आयोजित किया जाता है। यह मेला राजस्थान में आय की दृष्टि से सबसे बड़ा मेला है।*
- *महाभारत के बाद पांडवों ने यहाँ स्नान किया था तथा कौरव व पांडवों का मिलन भी इसी झील के तट पर हुआ था।*
- *प्राचीन काल में विश्वामित्र ने इसी झील के किनारे तपस्या की थी।*
- *वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना एवं वेदों का संहिताकरण इसी झील के किनारे किया था।*
- *भगवान राम ने अपने पिता दशरथ का पिंडदान इसी झील में किया था।*
- *पुष्कर झील में कुल 52 घाट हैं इसलिए इसे बावन घाटा के नाम से भी जाना जाता है इसमें एक महिला घाट भी है जो महिलाओं के स्नान के लिए बनवाया गया था जिसका निर्माण 1911 ई. में मैडम मैरी के द्वारा करवाया गया था । इस घाट को गाँधी घाट के नाम से जाना जाता है।*
- ***इस झील के तट पर प्रसिद्ध वराह मंदिर है जिसका निर्माण आनाजी (अर्णोराज) के द्वारा*** *करवाया गया था।*
- *इसी झील के तट पर द्रविड़ शैली में निर्मित रंगाजी रंगनाथ जी बैंकुंठ मंदिर है।*
- *इसी झील के समीप रत्नागिरी पर्वत पर सावित्री मंदिर भी स्थित है।*
- ***कालिदास ने अपने ग्रंथ "अभिज्ञान शाकुंतलम्" की रचना इसी झील के तट पर*** *की थी।*
- ***महात्मा गांधी की अस्थियां इसी झील में*** *प्रवाहित की गई थी इसीलिए इस झील को* ***"गांधी घाट"*** *के नाम से भी जाना जाता है ।*
- *इसी झील के समीप आमेर के मानसिंह प्रथम द्वारा निर्मित मान पैलेस है वर्तमान में यहाँ मान पैलस होटल का संचालन किया जा रहा है।*
- *इस झील के आस-पास छोटे-बड़े लगभग 400 मंदिर स्थित हैं इस कारण* ***पुष्कर झील को मंदिरों की नगरी"*** *भी कहा जाता है।*
- *इस झील को सर्वाधिक हानि पहुंचाने वाला मुगल बादशाह औरंगजेब था।*
- *सन् 1705 ईस्वी में गुरु गोविंद सिंह इस झील के किनारे गुरु गोविंद साहब का पाठ किया था तथा सन् 1809 में इस झील का पुर्नद्वार मराठों के द्वारा करवाया गया था।*
- *1997-98 ई. में कनाडा के सहयोग से यहाँ सफाई कार्य करवाया गया ।*
- ***पुष्कर के पंचकुण्ड को "मृगवन" घोषित किया गया है।***

2. <u>जयसमंद झील</u> -

- *राज्य के* ***सलूम्बर*** *जिले में स्थित* ***जयसमंद झील को ढेबर झील*** *के नाम से भी जाना जाता है।*
- ***इस झील का निर्माण गौतमी नदी, झामरी नदी तथा बगार नदी का पानी रोक कर मेवाड़ के राजा जयसिंह के द्वारा*** *1685 - 91 में करवाया गया था।*
- ***यह झील एशिया की दूसरी तथा राजस्थान की प्रथम मीठे पानी की सबसे बड़ी, कृत्रिम झील है।***
- ***इस झील पर छोटे-बड़े कुल 7 टापू स्थित हैं*** *जिन पर भील तथा मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं इनमें से* ***सबसे बड़ा टापू "बाबा का भांगड़ा" है जबकि सबसे छोटा टापू "प्यारी" है।***
- *इस झील के एक टापू का नाम* ***"बाबा का मगरा"*** *भी है, जिस पर वर्तमान में एक होटल संचालित किया जा रहा है इस होटल का नाम आइसलैंड रिसोर्ट है।*
- ***इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरे निकलती हैं – इनमें से एक का नाम श्यामपुरा और दूसरी भाट है इन दोनों*** *नेहरों की कुल लंबाई 324 किलो मीटर है।*
- *इस झील की लंबाई 15 किलो मीटर तथा चौड़ाई अधिकतम 8 किलोमीटरहै।*
- *इस झील में 6 कलात्मक छतरियां एवं प्रसाद बने हुए हैं।*
- *जयसमंद झील से उदयपुर जिले को पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है ।*
- ***इस झील के तट पर नर्मदेश्वर शिवालय, चित्रित हवा महल तथा रूठी रानी क महल स्थित*** *है।*

3. <u>राजसमंद झील</u> -

- *राजसमन्द जिले में स्थित इस झील का* ***निर्माण मेवाड़ के राजा राजसिंह के द्वारा गोमती नदी का पानी रोक कर*** *सन् 1662 से 1680 के बीच में करवाया गया था। इस झील की कुल लंबाई लगभग 6.5 किलोमीटर तथा चौड़ाई लगभग 3 किलोमीटर है।*
- *यह राज्य में एकमात्र ऐसी झील है, जिसका नामकरण किसी जिले के नाम पर हुआ है।*
- *राजसमंद झील राज्य की दूसरी सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील है।*
- ***राजसमंद झील के तट पर एशिया की सबसे बड़ी प्रशस्ति "राज प्रशस्ति" 25 बड़े शिलालेखों पर उत्कीर्ण हैं। राज प्रशस्ति की रचना राजा "राजसिंह" के दरबारी कवि रणछोड़भट्ट तैलंग के द्वारा की गई थी*** *। संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण इस प्रशस्ति पर* ***1017 श्लोक उत्कीर्ण*** *हैं।*
- *राजसमंद झील के तट पर प्रसिद्ध द्वारकाधीश का मंदिर है यहीं पर वल्लभ संप्रदाय की पीठ भी स्थित है । यहाँ पर एक प्रसिद्ध त्यौहार मनाया जाता है जिसको "अन्नकूट महोत्सव" के नाम से जानते हैं।*
- *राजसमंद झील के तट पर "बिना पति के सती होने वाली* ***घेवर माता का मंदिर"*** *स्थित है।*

- इस झील को एक अन्य नाम "राजसमुद्र" के नाम से भी जानते हैं।
- इस झील को राज्य सरकार ने धार्मिक दृष्टि से पुष्कर की तरह पवित्र घोषित किया है अर्थात् राज्य सरकार ने इस झील को सबसे पवित्र झील घोषित किया है।

4. पिछोला झील -

- राज्य के **उदयपुर जिले में स्थित** पिछोला झील का निर्माण सन् 1387 में **राणा लाखा के काल में एक पिच्छू / छित्र नामक चिड़ीमार बंजारे ने अपने बैल की स्मृति (याद)** में करवाया था । यह झील उदयपुर की सबसे प्राचीन तथा सबसे सुंदर झील है
- सन् 1525 ईस्वी में **राणा सांगा ने पिछोला झील का जीर्णोद्धार करवाया** था इस झील को पक्का कराने का श्रेय राजा उदयसिंह को जाता है।
- **पिछोला झील के तट पर एक जग मंदिर** स्थित है । इस मंदिर का निर्माण कार्य 1551 में महाराणा अमर सिंह ने शुरू करवाया था तथा महाराणा करण सिंह (1620-1628) तक ने इसका कार्य जारी रखा, और इसका पूर्ण कार्य महाराणा जगतसिंह ने (1628-1652) में करवाया था।
- 1857 की क्रांति के समय अंग्रेजों ने इसी झील के किनारे शरण ली थी तथा खुर्रम शाहजहाँ ने भी अपने विद्रोही दिनों में यहाँ पर शरण ली थी।
- **इस झील के तट पर जगनिवास स्थित है** जिसका निर्माण 1746 में मेवाड़ के तत्कालीन शासक **जगतसिंह द्वितीय के द्वारा** करवाया गया था। इसी जगनिवास महल को देखकर ही शाहजहाँ को ताजमहल बनाने की प्रेरणा मिली थी।
- यहाँ पर एक बीजारी नामक स्थान पर **गलनी / नटनी नामक चबूतरा स्थित है पिछोला झील के तट पर अमरचंद बंडवा द्वारा निर्मित बागोर की हवेली स्थित हैं जहाँ पर विश्व की सबसे बड़ी पगड़ी रखी हुई है।**
- पिछोला झील में भारत की सबसे पहली सौर ऊर्जा चलित नाव चलाई गई थी।
- पिछोला झील के तट पर महाराणा प्रताप ने मानसिंह प्रथम के लिए रात्रिभोज का आयोजन भी करवाया था।
- **पिछोला झील के तट पर उदयसिंह के द्वारा निर्मित राजमहल सिटी पैलेस स्थित है।** इतिहासकार फर्ग्युसन ने उदयपुर में स्थित राजमहलों की तुलना लंदन में स्थित विंडसर महलों से की है।

5. फतेहसागर झील -

- राज्य के **उदयपुर जिले में स्थित पिछोला झील के समीप देवाली नामक गाँव में स्थित** फतेहसागर झील का निर्माण 1678 ईस्वी में **ड्यूक ऑफ कनॉट के द्वारा** करवाया गया था इस कारण **इस झील को "कनॉट बाँध"** भी कहा जाता है।
- इस झील का **पुनरुद्धार** सन् 1888 में **महाराणा फतेहसिंह** के द्वारा करवाया गया था । इसलिए **इस झील को फतेहसागर झील के नाम से भी जानते हैं इस झील के समीप "मोती का मगरी" नामक पहाड़ी पर महाराणा प्रताप का स्मारक बना हुआ है।**
- इस झील में एक टापू है जिस पर नेहरू उद्यान स्थित है।
- इस झील के तट पर उदयसिंह के द्वारा उदयपुर की स्थापना से पहले निर्मित **एक मोती महल** की स्थापना की गई थी ।
- **इस झील में एक सौर वेधशाला की भी स्थापना की गई थीं**
- मौसम की सटीक गति विधियों का पता लगाने हेतु इस झील के तट पर एक टेलीस्कोप स्थापित किया गया । जिसका निर्माण बेल्जियम के द्वारा किया गया था।
- यह झील पिछोला झील से जुड़ी हुई है।

6. नक्की झील -

- राजस्थान राज्य के **सिरोही जिले में माउंट आबू स्थित पर "नक्की झील" राजस्थान की सर्वाधिक ऊंची तथा सबसे गहरी झील है।**
- इस झील का **निर्माण ज्वालामुखी उद्भेदन से** अर्थात् प्राकृतिक रूप से हुआ है अतः यह एक **क्रेटर झील** है, लेकिन पौराणिक मान्यता के अनुसार इस झील का **निर्माण देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदकर किया था इसीलिए इस को नक्की झील कहा जाता है।**
- यह झील पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है इस झील में एक टापू है जिस पर रघुनाथ जी का मंदिर बना हुआ है, इसके अलावा **इनके एक तरफ मेंढक जैसी चट्टानें बनी हुई है जिसे टॉड-रॉक कहा जाता है।**
- एक चट्टान की आकृति महिला के समान (घूंघट निकाले स्त्री के समान) है इसे **"नन रॉक"** कहा जाता है । एक आकृति लड़का - लड़की जैसी है जिसे **"कपल रॉक"** कहा जाता है इस झील के किनारे **"सन् सेट पॉइंट तथा हनीमून प्वाइंट"** स्थित है।
- इस झील के किनारे की पहाड़ियों के बीच में रामकुंड के नीचे 16 वीं शताब्दी का रघुनाथ जी का मंदिर स्थित है। इसके अलावा हाथी गुफा, चंपा गुफा, राम झरोखा, अन्य दर्शनीय स्थल है।
- **यह झील गरासिया जनजाति का आध्यात्मिक केंद्र है।**
- इसके समीप ही **"अबुदा देवी"** का मंदिर स्थित है अतः इस पर्वत को आबू पर्वत कहा जाता है।

7. आनासागर झील

- राज्य के **अजमेर जिले में स्थित आना सागर** झील का निर्माण 1137 ईस्वी में **अर्णोराज** (आनाजी) के द्वारा करवाया गया था ।
- ऐसा माना जाता है कि तुर्की की सेना में हुए नरसंहार के बाद खून से रंगी हुई धरती को साफ करने के लिए इस झील का निर्माण करवाया गया था।
- आना सागर झील के तट पर जहाँगीर द्वारा निर्मित एक **दौलत बाग** है **जिसे वर्तमान में 'सुभाष उद्यान"** कहा जाता है ।
- सुभाष उद्यान नामक स्थान पर जहाँगीर ने सर्वप्रथम सर टॉमस रो जो कि एक अंग्रेज था उससे वार्तालाप किया था

- यह उदयपुर का प्रसिद्ध है ।
- कठपुतली कार्यक्रम का संचालन सम्पूर्ण भारत में लोक कला मण्डल उदयपुर के द्वारा किया जाता ळै ।

बगली पाली

- लकड़ी के बर्तन बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं ।

उस्ता कला

- ऊँट की खाल पर बारिक चित्रकारी व विभिन्न प्रकार की डिजाइनों को उस्ता कला कहते हैं ।
- इसके लिए बीकानेर प्रसिद्ध हैं ।
- इसका प्रसिद्ध कलाकार हिसामुद्दीन था ।

नक्काशीदार फर्निचर -

- यह बाड़मेर का प्रसिद्ध हैं ।

छत्ता उद्योग

- यह फालना (पाली) के प्रसिद्ध हैं ।

टायर-ट्यूब उद्योग -

- यह कांकरोली (राजसमन्द) का प्रसिद्ध हैं ।
- रसगुल्ले, नमकीन व भुजिया बीकानेर की प्रसिद्ध हैं ।

गोटा उद्योग -

- यह उद्योग खण्डेला (सीकर) व बस्सी (चित्तौड़) का प्रसिद्ध हैं ।

शरबत व सुगन्धित इत्र उद्योग

- सवाईमाधोपुर में पायी जाने वाली खस-खस से घास बनाये जाते हैं ।

तिलपट्टी उद्योग

- यह ब्यावर का प्रसिद्ध हैं ।

अध्याय – 10

आदिवासी और उनकी अर्थव्यवस्था

सहरिया :

- राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।
- बारां जिलें के किशनगंज एव शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- **सहरियों का मुखिया** : कोतवाला
- बडें गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
- छोटो बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता है।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता है।

सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है।

- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : ।। गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : ४५ गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबाडो के वाल्मिकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मिकि' को अपना आदि पुरूष मानते है।
- सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं ।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते है।
- होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते है। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डो से लेंगी खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आला एवं लहंगी गीत गाया जाता है।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते है।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती है परंतु पुरूषों का मनाही है।
- **धारी संस्कार** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह वैसी ही आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते है। उसे 'गोपना' कहते है।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिली।
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडली।

अर्थव्यवस्था : सहरिया लोगों को जहाँ संमतल भूमि मिल जाती है पर कृषि एवं पशुपालन करते है। कृषि कार्यों में ५5 प्रतिशत, कृषक मजदूरी 35 प्रतिशत कार्यों में संलग्न व शेष वनों से लकड़ी व वन उपज एकत्रित करना, खनन कार्य करना। इस जाति में शिक्षा का अत्यंत अभाव है। अब शिक्षा

का विकास हो रहा है। सहरिया क्षेत्र में मामूनी की. संकल्प संस्था , अच्छा कार्य कर रही है ।

कंजर :-

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते है, जिसे ये 'पातो मांगना' कहते है।
- जोगणिया माता (चितौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
- रक्त दंती माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते है।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते है।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते है।
- मोर का मांस खाते है।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएँ चकरी नृत्य करती है। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते है, जिसे 'खूसनी' कहते है।

अर्थव्यवस्था –

कुछ लोग ठेला , टेम्पू चलाते है । ईश्वर का आशीर्वाद भी प्राप्त करते है । इसे पाती मांगना कहते है ।

कथौड़ी :-

- उदयपुर जिलें में अधिक संख्या में।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के है।
- खैर के वृक्ष से कत्था बनाते है इसलिए कथौड़ी कहते है।
- कथौडी दूध नही पीते है।
- कथौड़ी शराब पीते है एवं महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर पीती है।
- महिलाएं गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती है।
- कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी 'फड़का' कहलाती है।
- इनका मुखिया 'नायक' कहलाता है।
- **प्रमुख कविता** :डूंगर देव, वाद्य देव, भारी माता, कंसारी माता।
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35-40 परिवार ही बचे है।
- इनको 'मनरेगा' में विशेष लाभ दिया जाता है पूरे परिवार को 250 दिन का रोजगार दिया जाता है।
- कथौडी पुरुषों द्वारा 'सावलिया नृत्य' नवरात्रा के दिनो मे किया जाता है और महिलाओ द्वारा होली पर होली नृत्य करते है।
- कथौड़ी झोंपडे को 'खोलरा' कहते है।

डामोर :

- मुख्यत : उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा जिलें में।
- सर्वाधिक जनसंख्या : डूंगरपुर
- डूंगरपुर जिलें की सीमलवाड़ा पंचायत समिति को डामरिया क्षेत्र कहते है।
- एकमात्र जनजाति जो वनाश्रित नहीं है।
- कृषि एवं पशुपालन करते है।
- डामोर अपनी उत्पति 'राजपूतों' से मानते है।
- डामोर पुरुष महिलाओं के समान गहने पहनते है।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम 'चाड़िया' कहलाता है।
- मुखिया को मुखी कहते है।
- डामोर बहु विवाह करते है।
- विवाह का आधार वधु मूल्य कहते है।
- **अर्थव्यवस्था** : मुख्य रूप से कृषि कार्यों में संलग्न । कार्यो में संलग्न । डामोर पशुधन को लक्ष्मी मानकर उनकी पूजा दीपावली के अवसर पर विशेष रूप से करते है। डामोर गायों का श्रृंगार करते है तथा गायें रमाड़ते है। डामोर जनजाति गुजरात के पंचमहल में भरने वाले झेलाबावसी ' के मेले । में, विशेष रूप से भाग लेती है । डूँगरपुर जिलें में भरने वाला ग्यारस की रेवाड़ी का मेला जो भाद्रपद-शुक्ल को भरता है में भी भाग लेते है।

सांसी :

- भरतपुर जिलें में अधिक संख्या में है।
- इनकी उत्पति सांसमल से मानी जाती है।
- इनकी दो उपजातियाँ है : बीजा, माला।
- सांसी विधवा विवाह नहीं करते है ।
- 'भाखर बावजी' कुलदेवता की कसम खाने के बाद ये झूठ नहीं बोलते है।
- कसम खाते समय यह एक हाथ में कुल्हाड़ी एव दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते है।
- (भाखर बावजी के मंदिर में) लड़को को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है, जिसे 'कूकड़ी' रस्म कहते है।
- सिकोदरी माता इनकी प्रमुख आराध्य देवी है।

गरासिया :

- **सिरोही** :आबू, पिण्डवाड़ा तहसील में।
- गरासिया महिलाएं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रेम विवाह को अधिक तव्वजों दी जाती है।
- **विवाह के प्रकार** : मोर बंधिया विवाह (परम्परागत)
- पहरावणा विवाह
- ताणना विवाह (पैसे देकर या छीनकर)
- मेलवो विवाह (बाल विवाह के बाद बड़ी होने पर लडको को ससुराल छोड़कर आना)।
- **खेवणो विवाह** : इसे माता विवाह भी कहते है, शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है।
- सेवा विवाह (घर जंवाई)।
- गरासिये के मुखिये को सहलोत या पालवी कहते है।
- सफेद पशु एवं मोर को पवित्र मानते है।
- नक्की झील मे अस्थियों का विसर्जन करते है।
- 12वें दिन : अंतिम संस्कार।
- गरासिया राजस्थान की तीसरी बड़ी जनजाति है।

गरासियों की जातीय पंचायत के प्रकार :

- मोटी न्यात/ ऊँचलो न्यात : उच्च श्रेणी के लोग होते हैं, जिन्हें 'बाबीर-हाइया' कहते हैं।
- नेनकी न्यात : इसमें शामिल लोगों को माडरिया कहा जाता है।
- निजली न्यात
- जब कोई गरासिया पुरुष भील महिला से शादी कर लेता है तो उसे भील गरासिया कहते है और जब कोई गरासिया महिला भील पुरुष से शादी कर लेती है तो उसे गमेती गरासिया कहते है।
- हूरे/मोगी : मृतकों की याद में बनाएँ जाने वाले स्मारक।
- हेलरू : गरासियों की सहकारी संस्था।

गरासियों के प्रमुख मेले :

- **सियावा गाँव का मेला** : गणगौर, इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते है।
- **कोटेश्वर मेला** : यह अम्बा जी में भरता है।
- **चेतर-विचितर मेला** : देलवाड़ा।
- **अनाज भंडार की कोठिया** : सोहरी।
- अर्थव्यवस्था : पशुपालन व कृषि ।४5 प्रतिशत कृषि कार्यों में संलग्न वर्षाकालीन कृषि के आलावा लकड़ी काटना , मजदूरी, ढोर चराना व शिकार करना /

भील :

- राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति ।
- भील शब्द की उत्पति 'वील' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है तीर-कमान।
- भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है।
- भील राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है।
- उदयपुर जिलें में सर्वाधिक संकेन्द्रण।
- भील 'टोटम' को अपना कुलदेवता मानते है।
- पेड़-पौधों को 'टोटम' का प्रतीक माना जाता है।
- केसरिया नाथजी (ऋषभ देव) की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते है।
- 'फाइरे-फाइरे' भीलों का रणघोष है।
- हाथी वेण्डो विवाह : पेड़-पौधों को साक्षी मानकर किया जाने वाला विवाह। (हरण एवं लाड़ी)
- मंगेरिया त्यौहार के अवसर पर शादी की जाती है।
- **भील बाल**-विवाह नहीं करते है।
- तलाक को 'छड़ा फाड़ना' कहा जाता है।
- यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे पुरुष के साथ रहती है तो उस पुरुष को पूर्व पति को झगड़ा राशि देनी पड़ती है।
- विवाह के समय दुल्हें द्वारा अपने ससुराल में भराड़ी माता का मंदिर बनाना होता है।
- भराड़ी माता को विवाह की देवी कहते है।
- भील पुरुषों द्वारा हाथीमना नृत्य किया जाता है।
- होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है।
- गंवरी भीलों का प्रसिद्ध लोकनाट्य है जो रक्षाबन्धन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है।
- हेलमो : भीलों द्वारा मिलजुल कर किया जाने वाला कार्य।

भीलों के प्रमुख मेले :

- **छोटिया अम्बा मेला** : बाँसवाड़ा ।
- **बेणेश्वर मेला** : डुगरपुर (माघ पूर्णिमा) नवाटापुरा गांव में।
- भील स्थानान्तरित कृषि करते है। यह दो प्रकार की होती है।
- **दजिया :** मैदानी भागों में की जाने वाली कृषि।
- **चिमाता :** पहाड़ी भागों में की जाने वाली कृषि ।
- भीलो का मुखिया 'गमेती' कहलाता है।
- मेवाड़ के राजचिन्ह में भील का चित्र बना हुआ है।
- मेवाड़ के महाराणा के राजतिलक में भी भील सरदार भूमिका निभाता था।
- **पाखरिया** : किसी सैनिक के घोडे को मारने वाला।

भीलों की अर्थव्यवस्था

- अब कृषि कार्यों में संलग्न 86 प्रतिशत कृषि 10 प्रतिशत मजदूरी, 4 प्रतिशत वन-शिकार व खान खोदने में संलग्न। पहाड़ी ढालों **चिमाता/वालर/झूमिंग** खेती करते है। मैदानी भागों में वनों को काट कर खेती दजिया करते है । वनों से कोपलें, फल, गोंद व शहद एकत्रित करते है | पशुपालन- भैंस, गाय, बैल, भेड़, बकरियाँ, मुर्गियाँ। कुछ भील लकड़हारे भी होते है।
- महाराणा प्रताप की **यशगाथा** के निर्माण में भील आदिवासियों का योगदान अविस्मरणीय है। मेवाड़ राज्य की रक्षार्थ किए गए भीलों के त्याग एवं स्वामिभक्त के कारण ही इस राज्य के राज्य चिह्न (Emblem of mewar) में चित्तौड़ के किले में एक ओर राजपूत राजा तथा दूसरी ओर भील राजा का चित्र अंकित है।

भील शब्दावली

- **अटक :** भीलों के गौत्र को अटक कहा जाता है।
- **ढेपाड़ा :** भील पुरुषों द्वारा पहने जाने वाली तंग धोती।
- **पोत्या :** भीलों के सिर पर स्थित सफेद साफा।
- **खोयतु :** भीलों द्वारा कमर पर बांधे जाने वाली लंगोटी ।
- **कछावू :** भील स्त्रियों का काले व लाल रंग का घाघरा ।
- **पिरिया :** भील दुल्हनों द्वारा विवाह के अवसर पर पहने जाने वाला पीले रंग का लहंगा ।
- **सिंदूरी** : भील दुल्हनों द्वारा विवाह के अवसर पर पहने जाने वाली लाल रंग की साड़ी ।
- **टापरा :** भीलों के घर ।
- **फइरे- फइरे :** भील जांति का रणघोष ।
- **भंगोरिया :** इस त्यौहार पर भील युवक-युवतियाँ अपना जीवन साथी चुनते हैं |
- **हथीमना :** विवाह के अवसर पर भील पुरुष द्वारा जमीन पर घुटने टेककर बैठकर तलवार को घुमाते हुए नृत्य करना।
- **फला/पाल :** भीलों के बहुत से झोंपड़ों का समूह। में व्याप्त
- **भराडी :** राजस्थान के दक्षिणांचल (कुशलगढ़) में, भीली जीवन में व्याप्त वैवाहिक भित्ति चित्रण की प्रमुख लोक देवी 'भराडी के नाम से जनि जाती हैं

अध्याय - 3

नदियाँ एवं झीलें

- **नदियाँ**
- भारत नदियों का देश हैं । भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं । नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं ।
- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहद् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैं ।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं । कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजला (Drainage Network) कहते हैं ।
- निश्चित वाहिकाओ (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता हैं ।

भारतीय अपवाह तंत्र

अरब सागरीय अपवाह तंत्र

बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र से तात्पर्य किसी क्षेत्र की जल प्रवाह प्रणाली से हैं अर्थात् किसी क्षेत्र के जल को कौन सी नदियाँ बहाकर ले जाती हैं ।

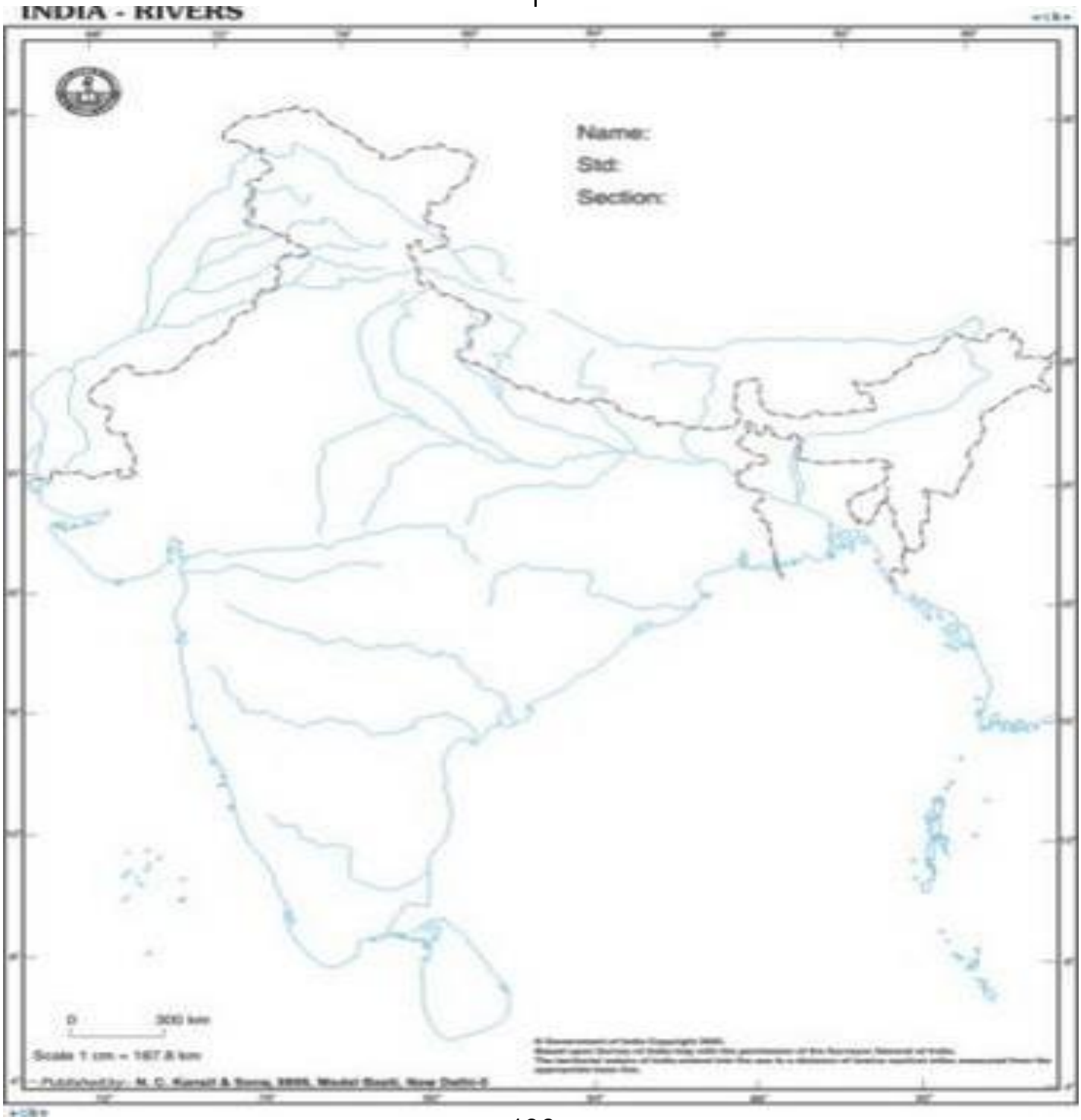

- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं । बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिंधु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं । अपना जल अरब सागर में गिराती हैं ।
- नदी अपना जल किसी विशेष दिशा में बहाकर समुद्र में मिलाती हैं, यह कई कारकों पर निर्भर करता हैं । जैसे भूतल का ढाल, भौतिक संरचना, जल प्रवाह की माना एवंज ल का वेग ।

जल सम्भर क्षेत्र / Wateshad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया हैं

1. **प्रमुख नदी श्रेणी:** जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग km से अधिक हैं । इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल हैं । जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती, बराक आदि ।
2. **मध्यम नदी श्रेणी:** जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग km के बीच हैं । इसमें 44 नदी श्रेणिया हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि ।
3. **लघु नदी श्रेणी:** जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग km से कम हैं । इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों मे बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं ।

अपवाह प्रवृत्ति

1. **पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह** - वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं। जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिंधु
2. **अनुवर्ती नदियाँ** - वे नदियाँ, जो समान्य ढाल की दिशा में बहती हैं। । प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ हैं ।
3. **परवर्ती नदियॉ** - चम्बल, सिंद्धु, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं । गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण हैं ।
4. **दुमाकृतिक अपवाह** - वह अपवाह जो शाखाओं में फैला हो, जो द्विभाजित हो तथा वृक्ष के समान प्रतीत हो उसे दुमाकृतिक अपवाह कहते हैं ।
5. **जालीनुमा अपवाह** - यह एक आयताकार प्रतिरूप हैं । जहाँ मुख्य नदियाँ एक दूसरे से समान्तर बहती हैं और सहायक नदियाँ समकोण पर पायी जाती हैं ।
6. **कंटकीय प्रतिरूप** - अपवाह का प्रतिरूप जहाँ मुख्य नदी के साथ सहायक नदियाँ के संगम में एक असंगत सम्मिलन नजर आता हैं ।
7. **आयताकार अपवाह** - वह अपवाह प्रतिरूप, जिसकी विशेषता सहायक नदियों एवं मुख्य नदी के बीच समकोणीय घुमाव एवं समकोणीय सम्मिलन हैं ।
8. **अरीय प्रतिरूप** - इस अपवाह प्रतिरूप में किसी केन्द्रीय स्थान से नदियों का बहिर्गमन होता हैं, जो एक पहिये के अरों के अनुरूप होता हैं ।
9. **वलयाकार प्रतिरूप** - इस प्रकार के अपवाह प्रतिरूप में, परवर्ती नदियाँ अनुवर्ती नदी से जुड़ने से पहले वक्र अथवा चापाकार मार्ग से होकर गुजरती हैं ।

यह आंशिक रूप से भूमिगत वृत्ताकार संरचना के अनुकूलन का परिणाम हैं ।

भारत में अपवाह तंत्र

भारत के अपवाह तंत्र का नियंत्रण मुख्यतः भौगोलिक स्वरूप के द्वारा होता हैं ।

भारतीय नदियाँ का विभाजन
उद्गम एवं प्रकृति के आधार पर

हिमालयी या उत्तरी भारत का

प्रायद्वीपीय या दक्षिणी भारत का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र

यद्यपि इस विभाजन योजना में चंबल, बेतवा, सोन आदि नदियों के वर्गीकरण में समस्या उत्पन्न होती हं । क्योंकि उत्पत्ति व आयु में ये हिमालय से निकलने वाली नदियों से पुरानी हैं । फिर भी यह अपवाह तंत्र के वर्गीकरण का सर्वमान्य आधार हैं ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

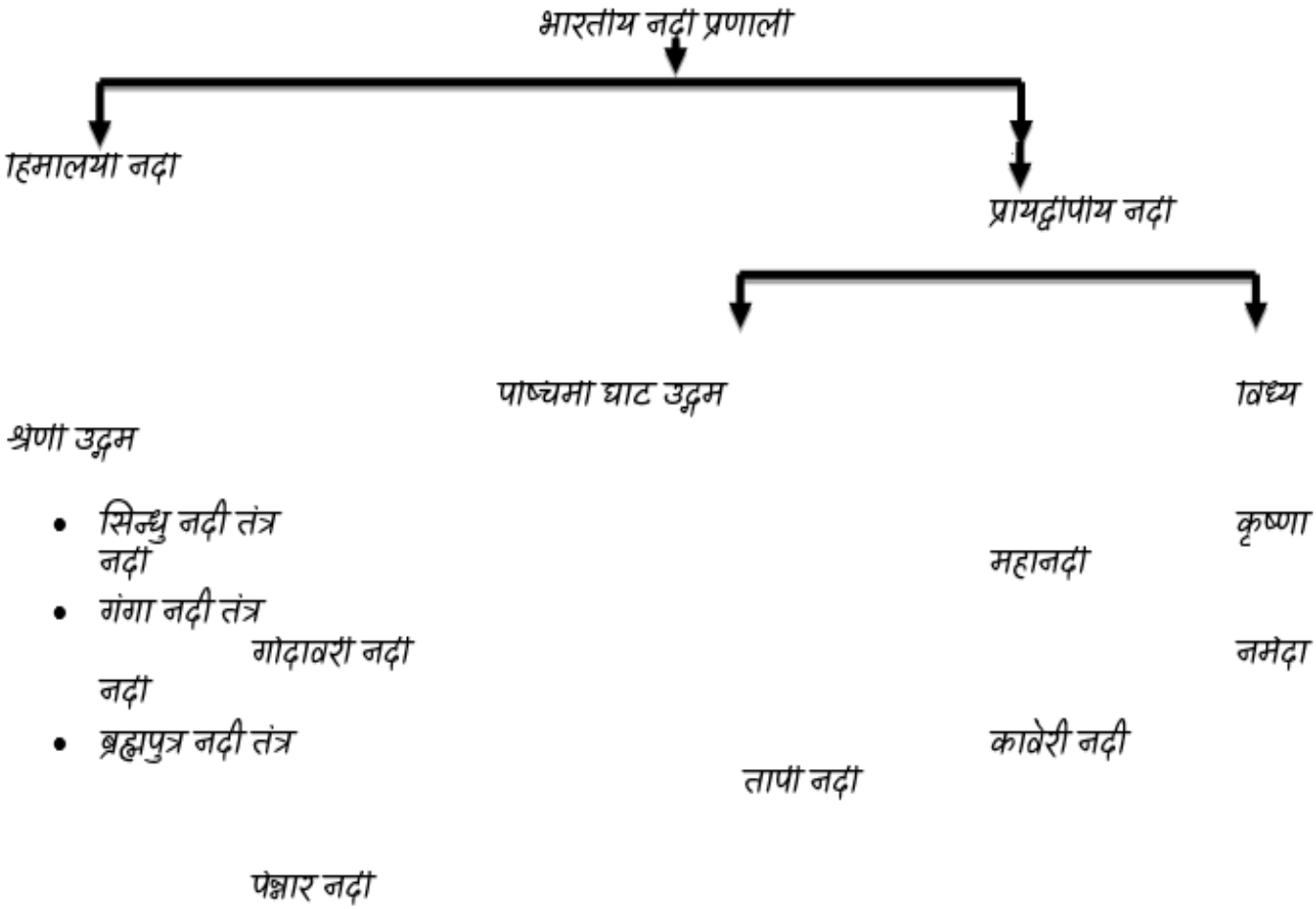

भारतीय नदी प्रणाली

हिमालयी नदी

प्रायद्वीपीय नदी

पश्चिमी घाट उद्गम

विंध्य श्रेणी उद्गम

- सिन्धु नदी तंत्र
- गंगा नदी तंत्र
- ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र

कृष्णा नदी

महानदी

गोदावरी नदी

नर्मदा नदी

कावेरी नदी

तापी नदी

पेन्नार नदी

<u>हिमालयी अपवाह तंत्र</u>

- *उत्तर भारत के अपवाह तंत्र में हिमालय का अधिक महत्त्व हैं । ये नदियाँ तीव्र गति से अपनी घाटियों को गहरा कर रही हैं । उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं । इन्ही नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।*
- *इस क्षेत्र की नदियाँ बारहमासी Prennial हैं क्योंकि ये वर्षण एवं बर्फ पिघलने दोनों क्रियाओं से जल प्राप्त करती हैं । ये नदियाँ गहरे महाखण्डों से गुजरती हैं । जो हिमालय के उत्थान के साथ-साथ होने वाली अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित हैं ।*
- ***इंडो ब्रह्म नदी:-** भू-वैज्ञानिक मानते हैं कि, मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी । जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्मा नदी कहा गया हैं ।*

<u>इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -</u>

1. *पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ*
2. *मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ*
3. *पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ*

<u>हिमालयी अपवाह तंत्र की नदियाँ</u>

सिन्धु नदी तंत्र

गंगा नदी तंत्र

ब्रह्मपुत्र नदी

<u>I. सिन्धु नदी तंत्र</u>

- *सिन्धु जल संधि (1960)*
- *तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -*

1. व्यास, रावी, सतलुज
- *80% पानी भारत*
- *20% पानी पाकिस्तान*

2. सिन्धु, झेलम, चिनाब
- *80% पानी पाकिस्तान*
- *20% पानी भारत*

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं जो तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राकस ताल झील से निकलती हैं। जहाँ इसे लाँगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता हैं।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंड़ो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकील दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती हैं।
- सतलज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं। यह भाखडा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती हैं तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती हैं।
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती हैं।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं। रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड़ से निकलती हैं।
- यह नदी कुल्ली घाटी से गुजरती हैं। तथा धौलाधर श्रेणी में काटी और लारजी में महाखण्ड़ का निर्माण करती हैं।

रावी नदी (परुष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिंधु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती हैं।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिंधु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती हैं।

चिनाब नदी (अस्किनी)

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी हैं। जो चंद्रा और भाग नामक दो सरिताओं के मिलने से बनती हैं ये सरितायें हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांड़ी में आपस में मिलती हैं।
- इसलिये इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता हैं। पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1180 किमी हैं।

झेलम नदी (वितस्ता)

- यह सिन्धु की सहायक नदी हैं, जो कश्मीर घाटी के दक्षिण-पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती हैं।
- पाकिस्तान में प्रवेशकरने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखण्ड से गुजरती हैं।

गंगा नदी तंत्र

गंगा नदी

- गंगा नदी का उद्गम् उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिलें में गोमुख के निकट गंगोत्री हिमनद से हुआ हैं। जहां यह भागीरथी के नाम से जानी जाती हैं।
- गंगा नदी की ल. 2525km (उत्तराखंड) में 110 km. उ०प्र० में 1450 km.तथा बिहार में 445 km व पश्चिम बंगाल में520 km) हैं।
- उत्तराखण्ड में देवप्रयाग में भागीरथी, अलकनंदा नदी से मिलती हैं तथा इसके बाद यह गंगा कहलाती हैं
- अलकनंदा नदी का स्त्रोत बद्रीनाथ के ऊपर सतोपथ हिमनद से हुआ हैं।
- भागीरथी से देव प्रयाग में मिलने से पहले अलकनंदा से कई सहायक नदियाँ आकर मिलती हैं।

स्थान	नदी संगम
देवप्रयाग	भागीरथी + अलकनंदा
रुद्रप्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
कर्ण प्रयाग	पिंडार + अलकनंदा
नंद प्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
विष्णु प्रयाग	धौलीगंगा + अलकनंदा

- गंगा नदी हरिद्वार(उत्तराखंड) के बाद मैदानी क्षेत्रो में प्रवेश करती है तथा अपने दक्षिण पूर्व में बहते हुए इलाहाबाद (उ० प्र०) में पहुचती है जहां इससे यमुना नदी (गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी) आकर मिलती है।
- इसके बाद यह बिहार व प. बंगाल मे प्रवेश करती है। प. बंगाल में यह दो वितरिकाओं (धाराओ) में बट जाती है। एक धारा हुगली नदी कहलाती है जो प.बं. में चली जाती है तथा मुख्य धारा प.बं. होते हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है।
- बांग्लादेश में प्रवेश करने के बाद इससे ब्रह्मपुत्र नदी आकर मिलती है जिसके बाद यह पदमा के नाम से जानी जाने लगती है
- अन्त में यह बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है।

गंगा की प्रमुख सहायक नदियां

यमुना (सबसे लम्बी सहायक नदी),रामगंगा, गोमती , घाघरा , गडक , कोसी , महानंदा , सोन (दाहिनी तरफ से) इत्यादि।

यमुना नदी

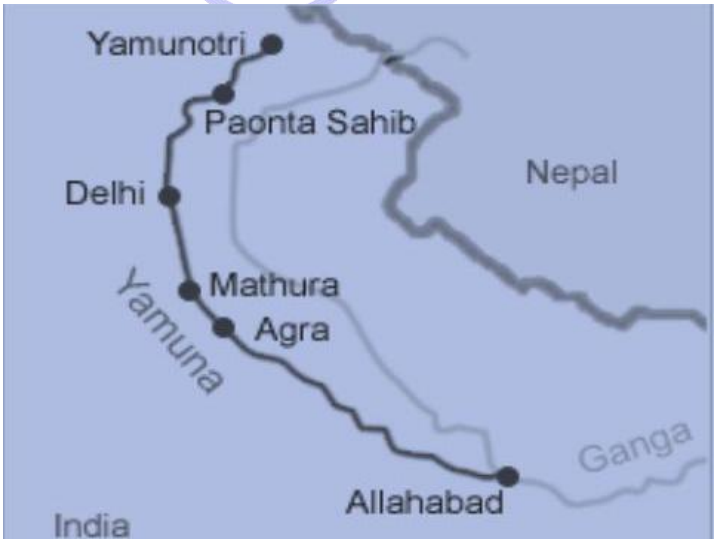

- इस नदी का उद्गम उत्तराखण्ड में बदरपूंछ श्रेणी की पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से हुआ है।
- यमुना नदी गंगा की सबसे पश्चिमी व सबसे लम्बी नदी है।जो गंगा से इलाहाबाद में आकर मिलती है ।
- प्रायद्वीप पठार से निकलने वाली चंबल सिंध, बेतवा केन इसके दाहिने तट पर मिलने वाली सहायक नदियां है इसके बाएं तट पर हिंडन रिंद सेगर वरुणा आदि नदियां मिलती है।
- चम्बल नदी म. प्र. के मालवा पठार मेंमहू के निकट निकलती है तथा राजस्थान के कोटा में बहते हुए उ०प्र०में यमुना से आकर मिलती है यह अपनी 'उत्खात भूमि' (Badlond Topography) के लिए प्रसिद्ध है।
- **रामगंगा नदी**- उत्तराखण्ड में गैरसेन के निकटगढवाल की पहाड़ियो से निकलती है तथा कन्नौज उत्तरप्रदेश में गंगा से आकर मिल जाती है ।
- **गोमती नदी**- पीलीभीत जिलें से निकलती है तथा गाजीपुरमे गंगा नदी से मिलती है। लखनऊ व जौनपुर इसी के किनारे बसे हैं ।
- **घाघरा नदी**- तिब्बत के पठार में स्थित'मापचाचुंगोहिमनद से निकलती है तथाबाराबकी जिला में शारदा नदी (काली गंगा)इससे आकर मिलती है।और अन्ततः यह छपरा (बिहार) में गंगा से मिलती है ।
- **सोननदी**- यह मध्यप्रदेश में अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती है तथा पटना के पहले गंगा के दायीं तट से इससे मिल जाती है ।
- **गडक नदी** -नेपाल से इसका उद्गम होता है तथा यह अन्ततसोनपुर (बिहार) में गंगा से मिल जाती है।
- **कोसी नदी** -इसका स्त्रोत तिब्बत में मा. एवरेस्ट केउत्तर में है जहां से इसकी मुख्य धारा अरुणा निकलती है। कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है।
- **महानंदा नदी** -महानंदा गंगा के बाएँ तट पर मिलने वाली अंतिम सहायक नदी है जो दार्जिलिंग की पहाड़ियों से निकलती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र (The Brahmaputra River System)

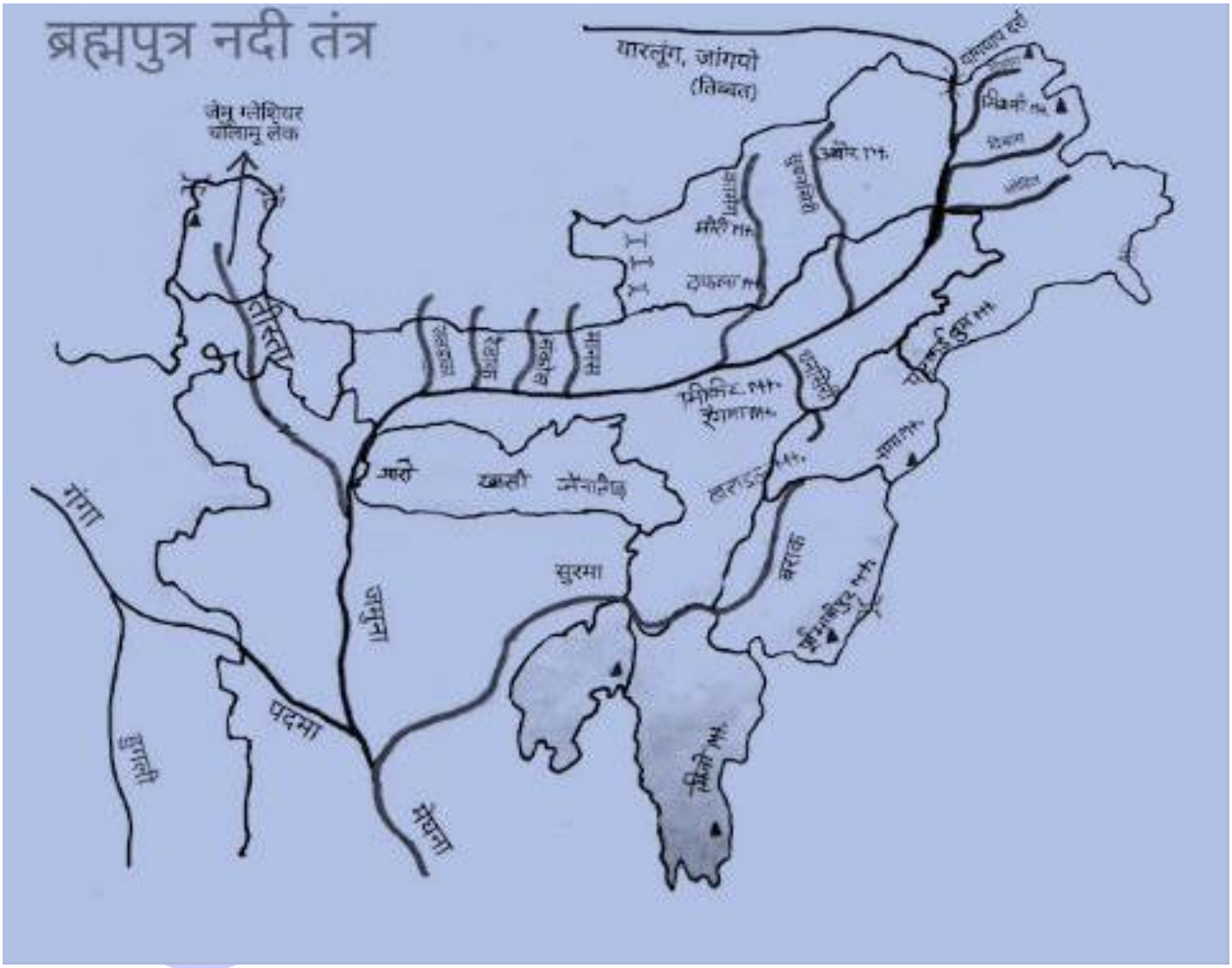

- ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम हिमालय के उत्तर में स्थित मानसरोवर झील के निकट चेमयांगडुंग ग्लेशियर से होता है। तिब्बत में ब्रह्मपुत्र को सांगपो (Tsangpo) के नाम से जाना जाता है। नामचा बरवा के निकट हिमालय को काटकर तथा "U"टर्न बनाते हुए गहरे गार्ज का निर्माण करती है और दिहांग के नाम से भारत में प्रवेश करती है। कुछ दूर तक दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहने के बाद इसकी दो प्रमुख सहायक नदियां दिवांग और लोहित इसके बाएं किनारे पर आकर मिलती है। इसके बाद इस नदी को ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है। इसकी अन्य सहायक नदियां धनश्री, सुबनसिरी, मानस, पगलादिया आदि हैं। ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लम्बाई 2900 किमी है, जिसमें 916 किमी. भारत में बहती है।
- असम के धुबरी के निकट ब्रह्मपुत्र दक्षिण दिशा में बहती हुई बांग्लादेश में प्रवेश करती है। बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र को जमुना नाम से जाना जाता है। जमुना में दाहिनी ओर से तीस्ता नदी आकर मिलती है। जमुना आगे जाकर पदमा में मिल जाती है तथा पदमा मेघना से मिलने के बाद, मेघना नाम से बंगाल की खाड़ी में गिरती है। असम घाटी में ब्रह्मपुत्र नदी गुंफित जल मार्ग बनाती है, जिसमें माजुली जैसे कुछ बड़े नदी द्वीप भी मिलते हैं।

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र :-

- हिमालयी नदी तंत्र की तुलना में प्रायद्वीप नदी तंत्र अधिक पुराना है।
- पश्चिमी घाट बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों व अरब सागर में गिरने वाली नदियों के बीच जल विभाजक कार्य करती है
- प्रायद्वीपीय भारत की नदियों की प्रौढावस्था व नदी घाटियों का चौड़ा व उथला होना इसके प्राचीन होने का प्रमाण है
- प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिम से पूर्व दिशा में बहती है
- नर्मदा एवं ताप्ती इनके विपरीत बहती है
- हिमालय के उत्थान के साथ नर्मदा व ताप्ती नदियों का भ्रंश घाटियों का निर्माण हुआ है

प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदियाँ

1. महानदी
2. गोदावरी
3. कृष्णा
4. कावेरी
5. नर्मदा
6. ताप्ती

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link) ⬇

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/9h4q2x 1 web.- https://shorturl.at/qCIJ5

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

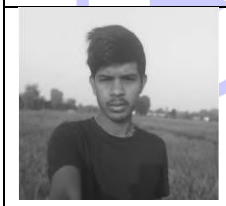

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

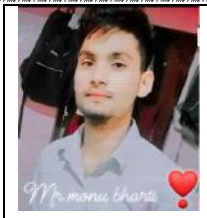	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
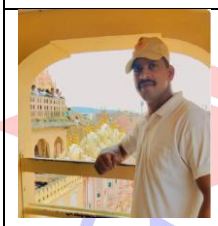	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें – https://wa.link/9h4q2x

Online Order करें – https://shorturl.at/qClJS

Call करें - 9887809083